मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

अनुवाद

डॉ० सच्चिदानन्द झा

वस्तुनिष्ठ शब्दों के गुह्य अर्थ के आभाव में शब्दों का अनुवाद किसी मूल रचनाकार की रचना के उद्‌गार को अभिव्यक्त नहीं कर सकता है। शब्दकोश में शब्दों के वस्तुनिष्ठ अर्थ तो रहते हैं, किन्तु उन शब्दों के व्यावहारार्थ गुह्य भाव की अभिव्यक्ति नहीं रहतीं हैं। वस्तुनिष्ठ शब्दों के गुह्य अर्थ को समझने के लिए अनुवादक को विषय वस्तु का यथेष्ठ ज्ञान रहना आवश्यक है।

भावोन्योव्यक्तो व्यक्तात्सनातनः।
यः सः सर्वेषु नश्यत्सु न विनश्यति॥

व्यक्त–अव्यक्त भावों के नष्ट हो जाने के पश्चात भी सनातन भाव विनष्ट नहीं होता है। सनातन भाव की जानकारी रखने वाले ही आर्ष ग्रथों के गुह्य अर्थों का अनुवाद करने में सक्षम होते हैं। यथा –

गो मांसं भोजयेनित्यं पिवेत् चामरवारुणीम्।
स एव कुलीनं मन्ये इतरे कुलघातकाः॥

जिन्होंने सनातन भाव का अध्ययन किया है, वे ही उपरोक्त श्लोक का सही अनुवाद कर सकते हैं, अन्य नहीं। इस श्लोक का भाव है- गो मांस अर्थात् विशेष योग क्रिया अनन्तर जिह्वा भक्षण काल सहस्त्रदल कमल से क्षरित सुधा का जो नित्य पान करते हैं, वे ही कुलीन मानव हैं, अन्य नहीं। एक अन्य उदाहरण लें। कुछेक योगियों को छोड़कर किसी ने भी महर्षि वेदव्यास रचित महाभारत ग्रंथ को समझने की चेष्टा ही नहीं की। महाज्ञान को महायुद्‌ध समझने की भूल से महाज्ञान को समझ पाना दुरुह हो गया। महाभारत का अर्थ ही होता है 'महाज्ञान'।

महाभारत ग्रंथ में द्रौपदी का अग्नि से प्रकट होना विद्‌वान पाठकों को भले ही अटपटा लगता हो, किन्तु जिन्होंने सनातन भाव का अध्ययन किया है, उनके लिए इस ऊटपटांग प्रसंग का भाव अनुवाद करना सहज हो जाता है। द्रौपदी प्रकरण के आधार पर द्रौपदी को याज्ञसेनी कहा जाता है। याज्ञसेनी अर्थात् यज्ञ से संभूत। महर्षियों और मुनियों की तप से प्रकट योगयुक्ति। पांच पाण्डवों से द्रौपदी के विवाह होने का तात्पर्य है देह स्थित पंचतत्व यथा पृथ्वी तत्त्व (मूलाधार), जल तत्त्व (स्वाधिष्ठान), तेज तत्त्व (मणिपूर), वायु तत्त्व (अनाहत) और आकाश तत्त्व (विशुद्‌धाख्य) के साथ योगयुक्ति के माध्यम से गमनागमन। आज्ञाचक्र अर्थात् कूटस्थ कृष्ण के निर्देशन में योगाभ्यास करना।

गीता के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत एक महाज्ञान ग्रंथ है। इतना ही नहीं, गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में 'गीता योग शास्त्रे' कहा गया है। गीता के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि यह योग शास्त्र है। यथा-

धृतराष्ट्र उवाच-

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत् संजय॥

इस श्लोक का अर्थ है- (धृतराष्ट्र) मन ने (संजय) आत्मज्योति से पूछा, (धर्मक्षेत्रे) देह रूपी धर्मस्थल (कुरुक्षेत्रे) कर्मभूमि में, (समवेता) इक्कट्ठे हुए (युयुत्सवः) संघर्षाभिलाषी (मामकाः) मेरे ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के चरित्र (च) और (पाण्डवाश्चैव) पंचतत्व (किमकुर्वत्) क्या किया?

यह भी विद्वान जनो को अटपटा लगता होगा कि युद्ध भूमि में योग पर चर्चा करते हुए अर्जुन को युद्ध करने के लिए कृष्ण क्यों प्रेरित करने लगे? योग और युद्ध दोनों संघर्ष है। यहाँ छाया वादी प्रसंग है।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा मोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥
गीता-२/३७

अर्थात् कृष्ण का कहना है कि योगाभ्यास करने वालों की मृत्यु होने पर श्रेष्ठ कुल में जन्म होता है। यदि योगाभ्यास करते सफलता मिल जाय तो परं पद (ब्रह्म) की प्राप्ति होती है।

नॉबेल पुरस्कार प्राप्त रविन्द्र नाथ ठाकुर रचित 'गीतांजलि' का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुआ है, किन्तु कवि की भाव अभिव्यक्ति बंगला भाषा में जिस अंदाज में दर्ज है, वह किसी अनुवाद में परिलक्षित नहीं हो पायी है। वो भाव तरंग, वो लय, वो झंकार, वो उछाल किसी अनुवाद में कहाँ?

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें